10 Method of Preparing the test

(b) तैयारी (Preparation) — परीक्षण की निश्चित एवं व्यवस्थित योजना बनाने के पश्चात ही परीक्षण निर्माता परीक्षण के प्रारम्भिक रूप को तैयारी करने लगता है सर्वप्रथम एवं विषय वस्तु के अनुसार वह विभिन्न पदों (items) का अन्य स्त्रोतों से चयन एवं स्वयं निर्माण करता है। वह पदों को अपने अनुभवों के आधार पर उपलब्धि मानकों (Standards) निर्मित परीक्षणों में से छाटकर अथवा अन्य स्त्रोतों से रचना कर एकत्रित कर लेता है जो कि परीक्षण की विषय वस्तु का प्रतिनिधित्व कर सके। परीक्षण में जितने प्रकार के पदों की आवश्यकता होती है उन्हें इस प्रारम्भिक रूप में ही निर्मित कर लिया जाता है परीक्षण के पदों को एकत्रित करने तथा उनके पद एवं को निश्चित करने के पश्चात परीक्षण निर्माता के लिए आवश्यक हो है

(C) परीक्षण का अन्तिम प्रारूप (Final Try out)

परीक्षण की योजना बनाने का प्रारम्भिक रूप की रचना के बाद यह जानने का प्रयास होता है कि परीक्षण कितना श्रेष्ठ, वैध, विश्वसनीय परीक्षण की वास्तविक रचना से पूर्व उसके प्रारम्भिक रूप को जाँच करना चाहिए। इस प्रारम्भिक जाँच को Pilot Study कहते हैं इसके निम्न उद्देश्य होते हैं

(1) इस जाँच के द्वारा कमजोर एवं बेकार के पदों को परीक्षण से निकाल दिया जाता है

(2) परीक्षण के अन्तिम रूप में पदों की वास्तविक संख्या ज्ञात करना।

Scanned with CamScanner

(1) परीक्षार्थी एवं परीक्षक के उत्तेरा में रुचि को उत्पन्न करना।

(2) विभिन्न पदों के मध्य अन्तर सम्बन्ध Inter item correlation

(3) समस्त पदों को उप-भागों में व्यवस्थित करना।

(5) अन्तिम रूप की वास्तविक समय सीमा ज्ञात करना।

(6) अंकन विधि का निश्चय करना।

प्रस्तुत सोपान के अन्तर्गत परीक्षण की जाँच दो भागों में की जाती है प्रथम जाँच कहलाती है। तथा दूसरी जाँच (Actual Try out) कहलाती है।

(1) प्रथम जाँच (Pre Try-out) —प्रारम्भिक जाँच के लिए परीक्षण का प्रशासन जनसंख्या (Total Population) के 15 या २० लोगों पर इस उद्देश्य से किया जाता है उसकी मुख्य कमियों को पाकर दूर किया जा सके।

(2) द्वितीय जाँच (Actual Try out) ⇒ परीक्षण की वास्तविक जाँच के अन्तर्गत पद (Items Analysis) की तकनीकी प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है पद विश्लेषण एक महत्वपूर्ण सोपान है। इसके बिना कोई भी परीक्षण पूरा नहीं होता है। पद विश्लेषण वह प्रविधि है माध्यम से परीक्षण निर्माता यह निश्चित करता है कि उस परीक्षण के किन पद सम्मिलित करना और किन पदों को छोड़ना है अर्थात इस प्रक्रिया के मुख्य उद्देश्य निम्न है

(A) To Select good items to be include in the final test

(b) To reject the invalid or less valid items.

चूंकि परीक्षण निर्माता अपने परीक्षण में उन्हीं प्रश्नों को सम्मिलित करना चाहता है जो उद्देश्य प्राप्ति में सहायक होते हैं। इस दृष्टि से परीक्षण को अधिक प्रभावशाली बनाने के परीक्षण निर्माता का उसमें सम्मिलित किये जाने वाले पदों का अलग-2 अध्ययन करना और विश्लेषण करना है। इस प्रक्रिया की कसौटी (Criteria) के रूप में हम प्रश्नों की विभेदीकरण क्षमता (Item Validity index or VI) तथा प्रश्नों का कठिनाई स्तर Item Defficulti Index (DI) की गणना करनी होती है। तथा केवल उन्हीं पदों का चयन किया जाता है इन दोनों कसौटियों पर सही उतरते हैं —

(d) परीक्षण का मूल्यांकन (Evaluation) ⟹ परीक्षण का मूल्यांकन निम्न दो बातों को ध्यान में रखकर किया जाता है।

(1) परीक्षा कितनी वैध, विश्वसनीयता, विभेदकारी या वस्तुनिष्ठ वस्तुनिष्ठ अर्थात परीक्षण में मापक यंत्र की विशेषताएं किस सीमा तक उपस्थित है।

(२) परीक्षा देने वालों के उत्तरों का स्वरूप कैसा है विद्यालयों में विषय का शिक्षण किस प्रकार चल रहा है। उत्तम प्रकार के परीक्षण ही यह सूचना विश्वस्त रूप से दे सकते हैं।

अत: परीक्षण का मूल्यांकन उत्तम मापन की भावी कसौटियों को ध्यान में रखकर ही किया जाता है।

उपलब्धि परीक्षण के उद्देश्य
"Aims of Achievement Test"

उपलब्धि परीक्षण शैक्षिक उद्देश्यों के लिए काफी महत्वपूर्ण है। उपलब्धि परीक्षण के निम्न उद्देश्य निम्नलिखित है—

(1) छात्रों के बारे मे जानना ⇒ उपलब्धि परीक्षण के माध्यम से छात्रों के बारे मे शैक्षिक स्थिति के बारे मे पता लगा पाते है

(2) छात्र के अध्ययन एवं वास्तविक स्थिति का ज्ञान प्राप्त करना उपलब्धि परीक्षण मुख्य उद्देश्य है छात्रों के अध्ययन क्षमता के बारे मे पता लगाना। पढ़ाई मे उनकी वर्तमान स्थिति क्या है, इसका पता लगाना

(3) अध्यापन संबन्धी कमियों का पता लगाना — उपलब्धि परीक्षण के माध्यम से अध्यापन का पता लगाने मे सक्षम है जो कि उनकी शैक्षिक शैली कितनी प्रभावशाली है या फिर उनमे क्या खामियाँ है

(4) छात्रों के समूह मे तुलनात्मक अध्ययन करना — उपलब्धि परीक्षण द्वारा विभिन्न छात्र समूहों के तुलनात्मक अध्ययन मे सहायता मिलती है।

(5) पाठ्यक्रम के प्रभावों या इसमे खामियों का पता लगाना उपलब्धि परीक्षण के माध्यम से इसका उद्देश्य पाठ्यक्रम का आकलन भी होता है। पाठ्यक्रम प्रभावशाली है या नही इसमे क्या खामियां है इत्यादि।

(6) विद्यालय के स्तर का पता लगाना — उपलब्धि परीक्षण का एक अहम उद्देश्य है, विद्यालय के स्तर का पता लगाना

जिस विद्यालय के परिणाम अच्छे होंगे वे स्कूल अच्छे माने जायेंगे और जहाँ के परिणामों या उपलब्धियों में कमी होगी वे निम्न स्तर वाले माने जायेंगे।

~~उपलब्धि परीक्षण का प्रश्न~~ समान

उपलब्धि परीक्षणों की २ परिसीमाएँ

"Limitations of Achievement Test"

उपरोक्त विशेषताओं के होते हुए भी उपलब्धि परीक्षणों की अपनी कुछ परिसीमाएं भी हैं — जो निम्न हैं

1 — ये परीक्षाएं स्थानीय प्रयोग की दृष्टि से अनुपयुक्त हैं

(2) इन परीक्षाओं में प्रायः समरूप परीक्षाओं का अभाव रहता है (Parallel form of Test)

(3) उपलब्धि परीक्षाएँ विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले केवल कुछ ही विषयों के लिये प्राप्त हो सके हैं विषय ऐसे भी होते हैं जिसमें इन परीक्षणों का निर्माण कार्य सरल

(4) इन परीक्षाओं का निर्माण, मूल्यांकन एवं व्याख्या कठिन कार्य है। साथ ही इन परीक्षाओं के निर्माण में समय एवं शक्ति भी अधिक व्यय होती है।

(5) इन परीक्षाओं के निर्माण, प्रमाणीकरण, इनके सामान्यक, निर्देश पुस्तिका आदि तैयार करने में बहुत व्यय होता है।

6 उपलब्धि परीक्षण के प्रयोग।

1) चयन प्रक्रिया में सहायक।—

2) कक्षोन्नति में सहायक।—

3) अध्यापकों को स्वयं के शिक्षण विधियों की प्रभावशीलता जानने में उपयोगी —

4) छात्रों को निदानात्मक मदद में उपयोगी —

5) छात्रों में अभिप्रेरणा जाग्रत करने में उपयोगी —

6) छात्रों में अभिरुचि उत्पन्न करने में उपयोगी —

7) छात्रों की समस्याओं को दूर करने में उपयोगी —

8) छात्रों में अनुशासन को उत्पन्न करने में उपयोगी —

9) छात्रों में मापन व मूल्यांकन में उपयोगी —

10) छात्रों की मानसिक व शारीरिक क्षमता को विकास में उपयोगी।

आदि।

Scanned with CamScanner